Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE **Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos**
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Jh y{eh pkyh l k

fgUnh vuokn

श्रीयंत्र

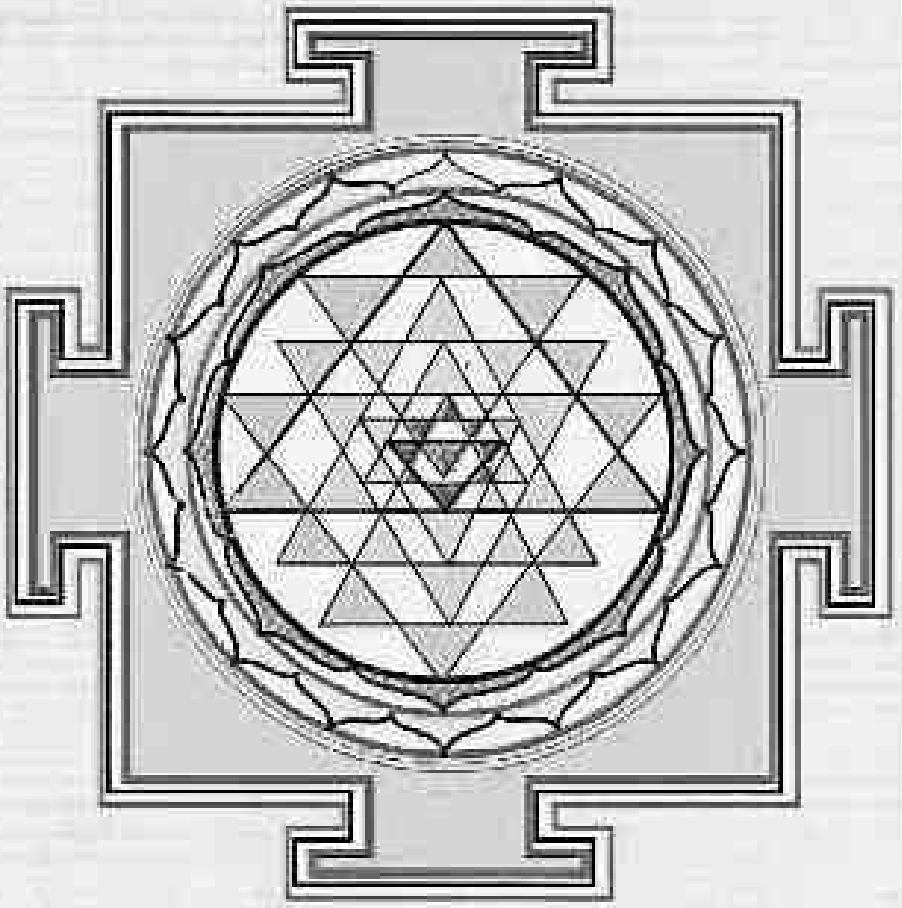

श्रीयंत्र को यंत्रशिरोमणि कहा गया है। इस महायंत्र की आराधना करने वाले पर मां महालक्ष्मी की अनन्य कृपा बरसती है। इस यंत्र के दर्शन मात्र से पुण्योदय होता है और साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

श्री लक्ष्मी चालीसा प्रारम्भ

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में बास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

हे मां लक्ष्मी! कृपा कर मेरे हृदय में निवास कीजिए। मेरी मनोकामना सिद्ध कर मेरी आशाओं को पूर्ण कीजिए।

॥ सोरठा ॥

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूं।
सब विधि करौ सुपास, जय जननी जगदम्बिका ॥

हे मां जगदम्बिके! आपकी जय हो। मैं हाथ जोड़कर विनती कर रहा हूं कि मेरी हर प्रकार से सहायता कीजिए।

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही।
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही॥

हे मां लक्ष्मी! मैं आपका स्मरण करता हूं। आप मुझे ज्ञान, बुद्धि और विद्या का दान दीजिए।

तुम समान नहिं कोउ उपकारी।
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥

आपके समान उपकार करने वाला अन्य कोई नहीं है। सभी प्रकार से मेरी अभिलाषा को पूर्ण कीजिए।

जै जै जै जननी जगदम्बा।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा॥

हे मां जगदम्बा! आपकी जय हो, जय हो, जय हो। आप ही सब लोगों का सहारा हो।

तुम ही हो घट घट की वासी।
विनती यही हमारी खासी॥

आप कण-कण में निवास करने वाली हैं। आपसे हमारी विशेष प्रार्थना है कि आप मुझे कष्टों से उबारें।

जग जननी जय सिन्धु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी॥

हे जगज्जननी! आप समुद्र की पुत्री हैं, आप की जय हो। आप गरीबों का दुख दूर करने वाली हो।

विनवौं नित्य तुमहिं महरानी।
कृपा करौ जग जननि भवानी॥

हे महारानी! मैं नित्यप्रति आपकी वंदना करता हूं। हे जगज्जननी भवानी! आप मेरे ऊपर कृपा कीजिए।

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी॥

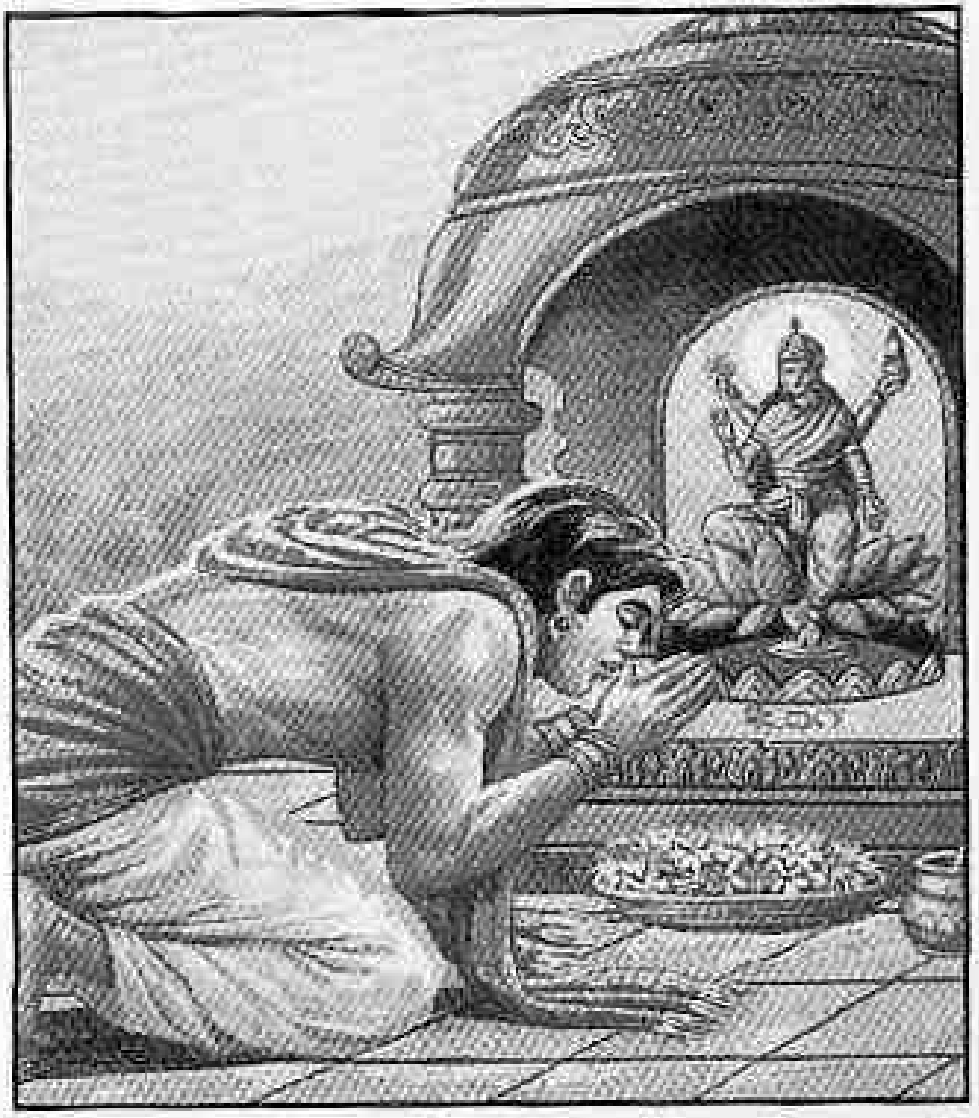

मैं किस प्रकार से आपकी स्तुति करूं (मुझे ज्ञान नहीं है) मेरे अपराधों को भूलकर आप मेरी सुधि लीजिए।

कृपा दृष्टि चितवौ मम ओरी।
जग जननी विनती सुन मोरी॥

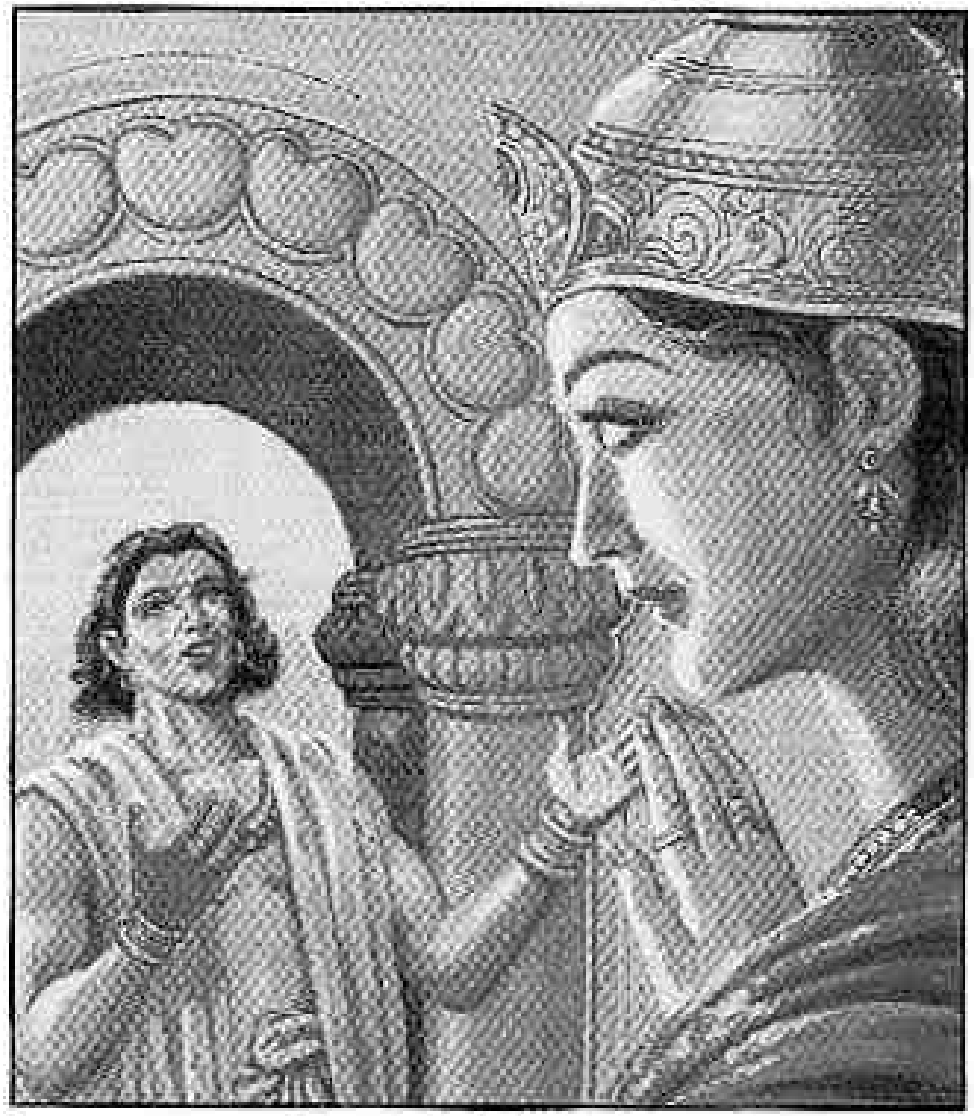

हे जगज्जननी! मेरी विनती सुनकर मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि डालिए। आपकी दृष्टि मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं।

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमारी माता॥

तुम ज्ञान, बुद्धि, विजय और सुख को देने वाली हो। हे मेरी मां! अब मेरे संकटों का हरण कर लो।

क्षीर सिन्धु जब विष्णु मथायो।
चौदह रत्न सिन्धु में पायो॥

जब विष्णु भगवान ने क्षीर-सिंधु का मंथन करवाया था तो उसमें से चौदह रत्न प्राप्त किए थे।

चौदह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभू बन दासी॥

चौदह रत्नों में एक तुम ही ऐसी हो, जो सुखों की भण्डार हो। तुमने दासी बनकर भगवान विष्णु की सेवा की।

जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा।
रूप बदल तहं सेवा कीन्हा॥

विष्णु भगवान ने जब और जहां अवतार लिया, अपना रूप बदलकर वहां-वहां आपने उनकी सेवा की।

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा॥

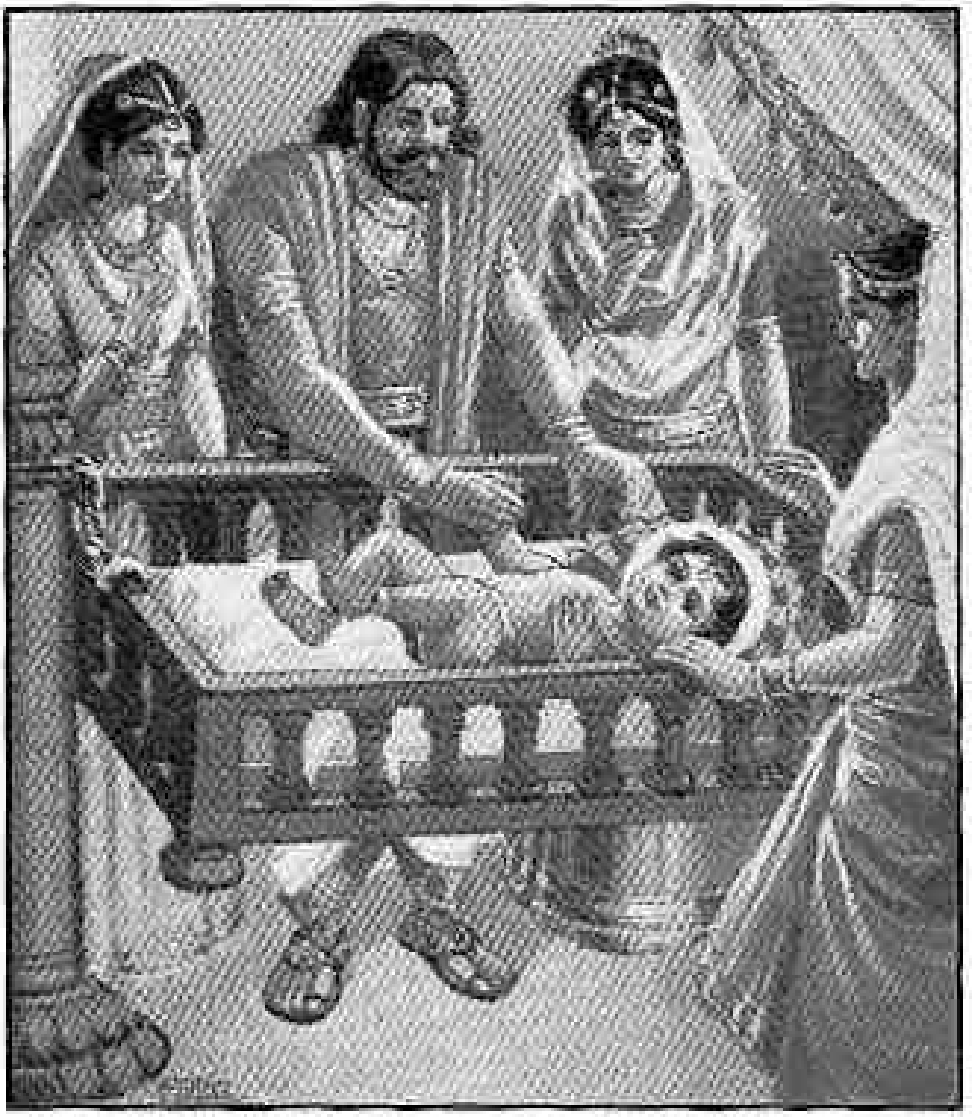

स्वयं भगवान विष्णु ने जब भक्तों की रक्षा के लिए मनुष्य का शरीर धारण करके अयोध्या में अवतार लिया—

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं॥

तब आप जनकपुरी में शरीर धारण कर प्रकट हुईं और पुलकित हृदय से सदैव उनके साथ रहते हुए उनकी सेवा की।

अपनाया तोहि अन्तर्यामी।
विश्वविदित त्रिभुवन की स्वामी॥

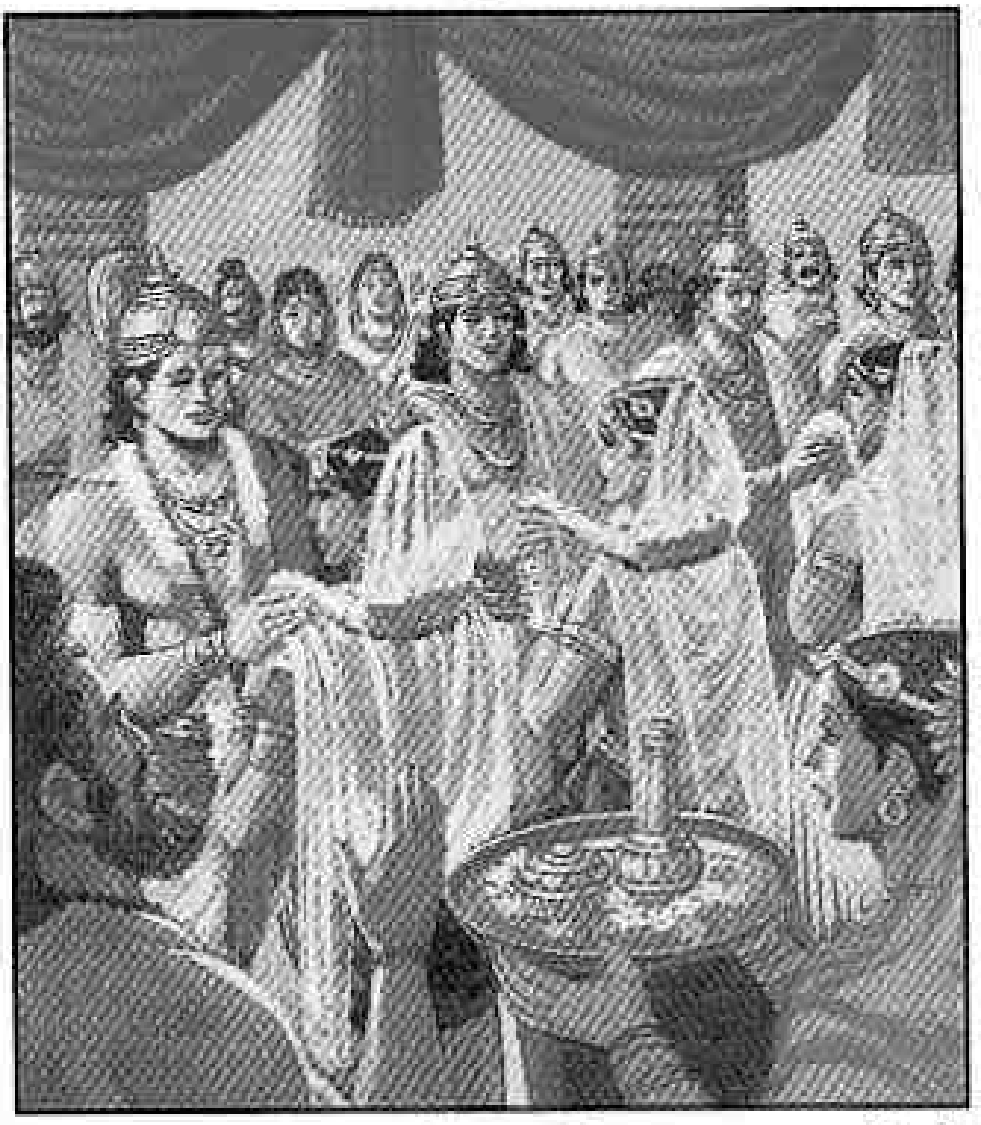

(उस समय) विश्वविख्यात, तीनों लोकों के स्वामी, अंतर्यामी प्रभु (श्रीराम) ने आपको अपना लिया।

तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी।
कहंलौ महिमा कहौं बखानी॥

आपके समान प्रबल शक्ति किसी अन्य में नहीं है। मैं कहां तक आपकी महिमा का वर्णन करूं?

मन क्रम वचन करै सेवकाई।
मन इच्छित वांछित फल पाई॥

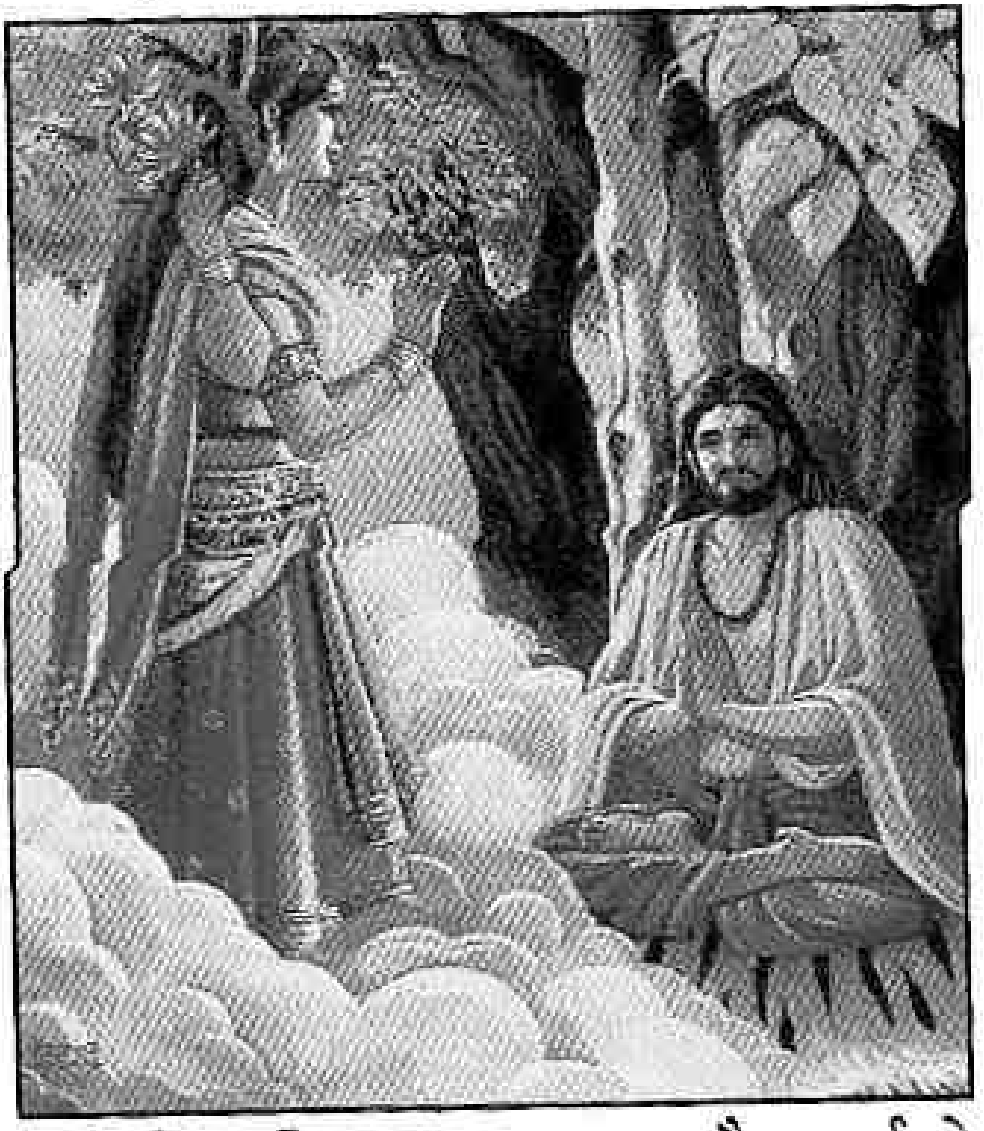

जो भी व्यक्ति मन, वचन और कर्म से आपकी सेवा करता है, वह मनचाहा फल प्राप्त कर लेता है।

तजि छल कपट और चतुराई।
पूजहिं विविध भांति मन लाई॥

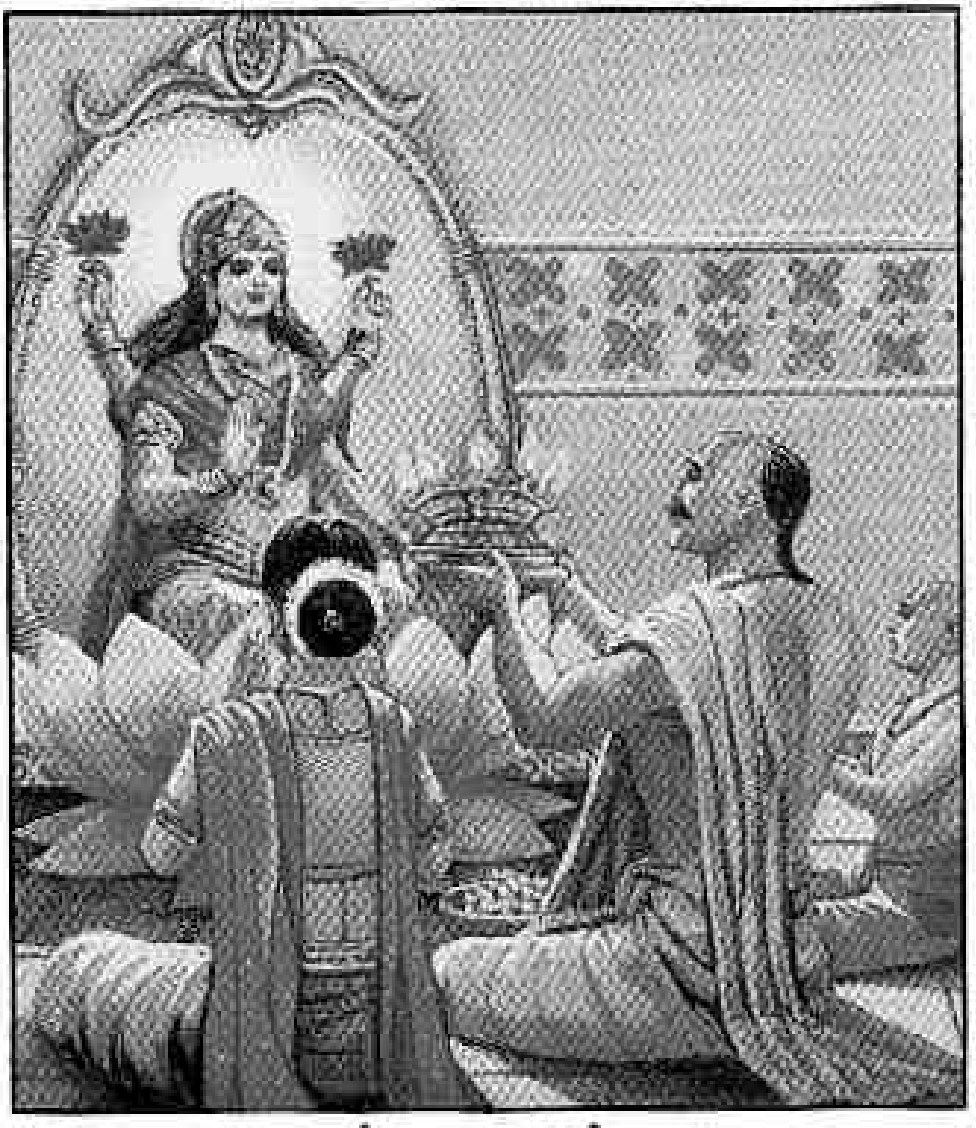

छल, कपट और चतुराई का त्याग कर, जो नर सच्चे मन से, अनेक प्रकार से आपकी पूजा करते हैं,

और हाल मैं कहौं बुझाई।
जो यह पाठ करै मन लाई॥

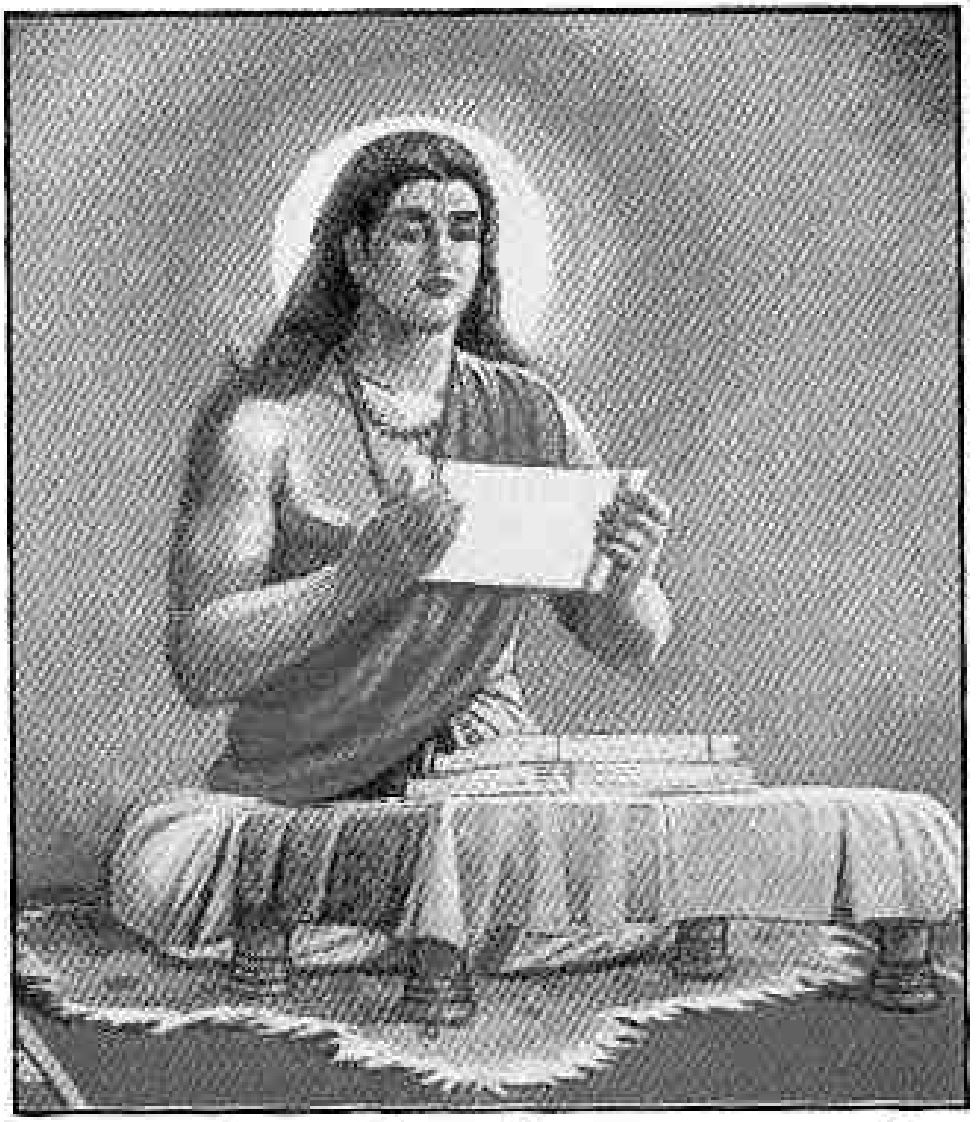

तथा पूर्ण समर्पण और एकाग्रतापूर्वक इस लक्ष्मी चालीसा का भलीभांति पाठ करते हैं,

ताको कोई कष्ट न होई।
मन इच्छित पावै फल सोई॥

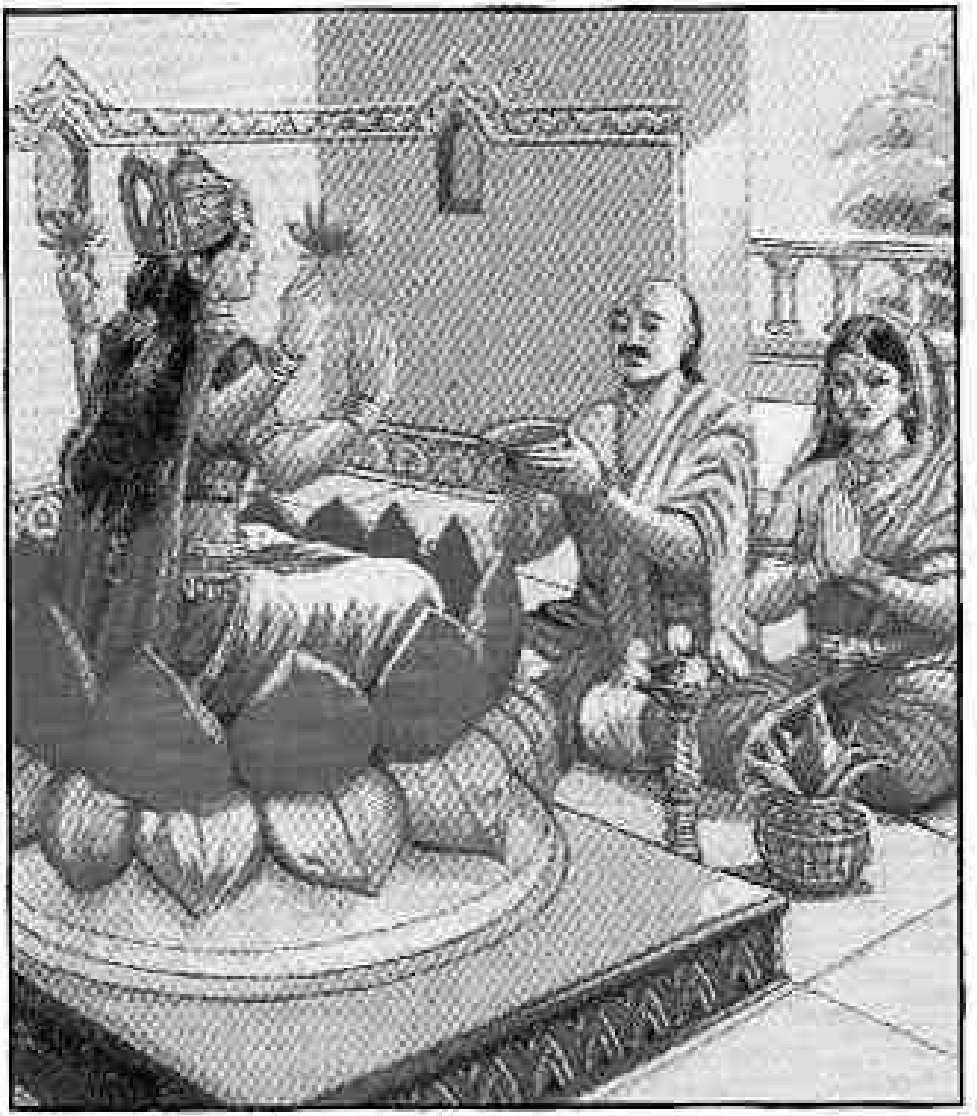

उनको किसी भी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता और वे इच्छित फल बिना किसी प्रयास के प्राप्त कर लेते हैं।

त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि।
त्रिविध ताप भव बंधन हारिणि॥

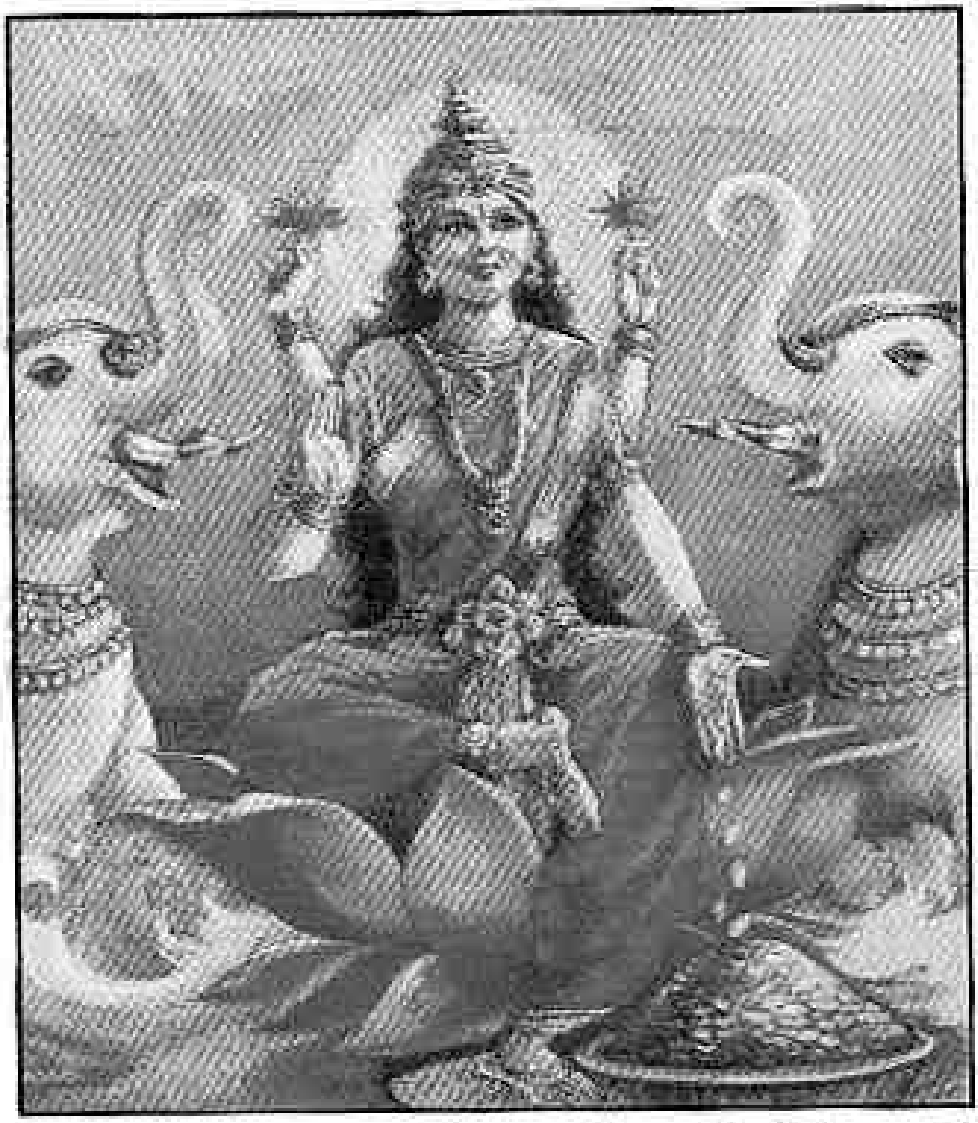

हे दुख दूर करने वाली, तीनों तापों और संसाररूपी बंधन को काटने वाली, आपकी जय हो।

जो यह पढ़े और पढ़ावै।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै॥

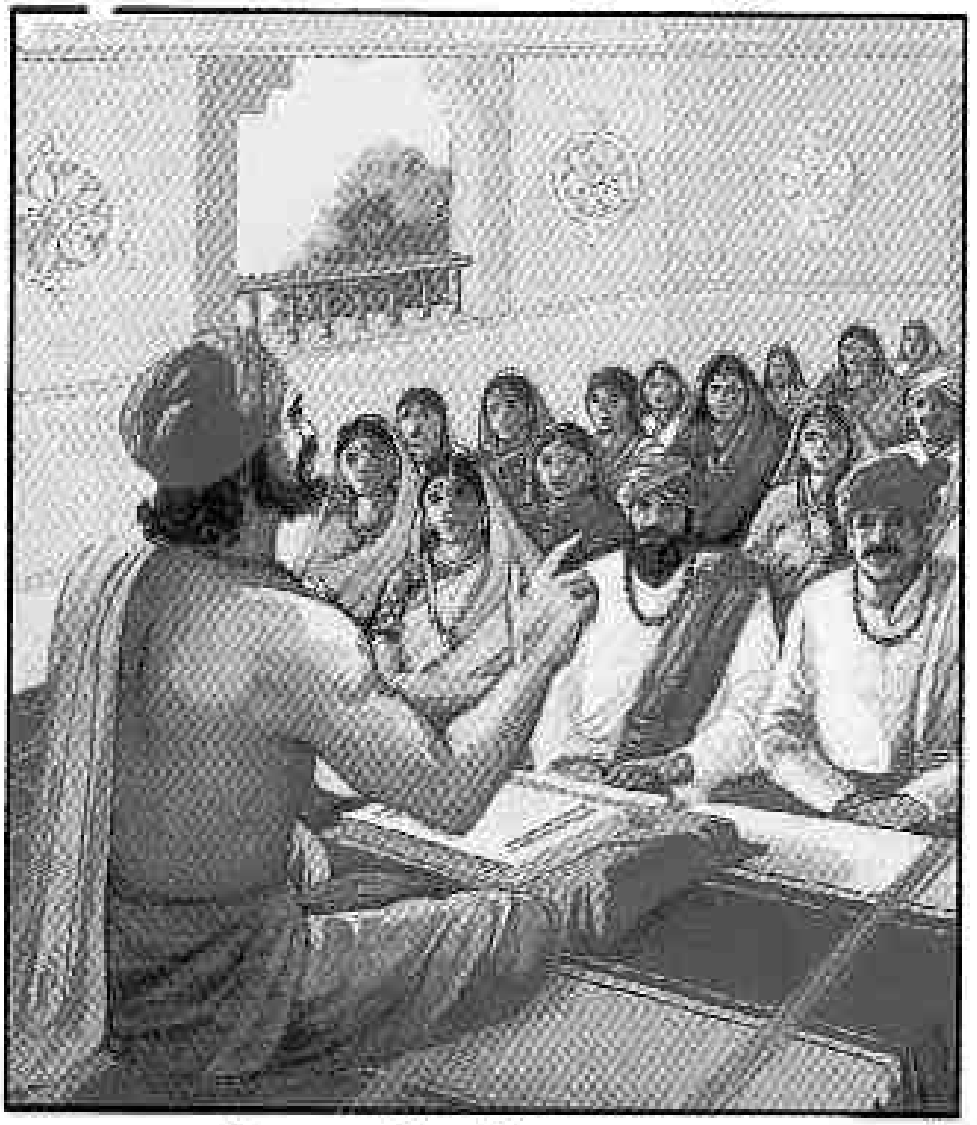

इस चालीसा को जो पढ़ता-पढ़ाता है और मन लगाकर स्वयं सुनता है और दूसरों को सुनाता है,

ताको कोइ न रोग सतावै।
पुत्रादिक धन सम्पति पावै॥

उसको किसी प्रकार का दुख नहीं सताता। वह पुत्र, धन-सम्पत्ति आदि को सहज ही प्राप्त कर लेता है।

पुत्रहीन अरु संपतिहीना।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना॥

यदि कोई पुत्रहीन हो, सम्पत्तिहीन हो, अंधा हो, बहरा हो, कुष्ठरोगी हो या अत्यंत दीन हो,

विप्र बोलाय कै पाठ करावै।
शंका दिल में कभी न लावै॥

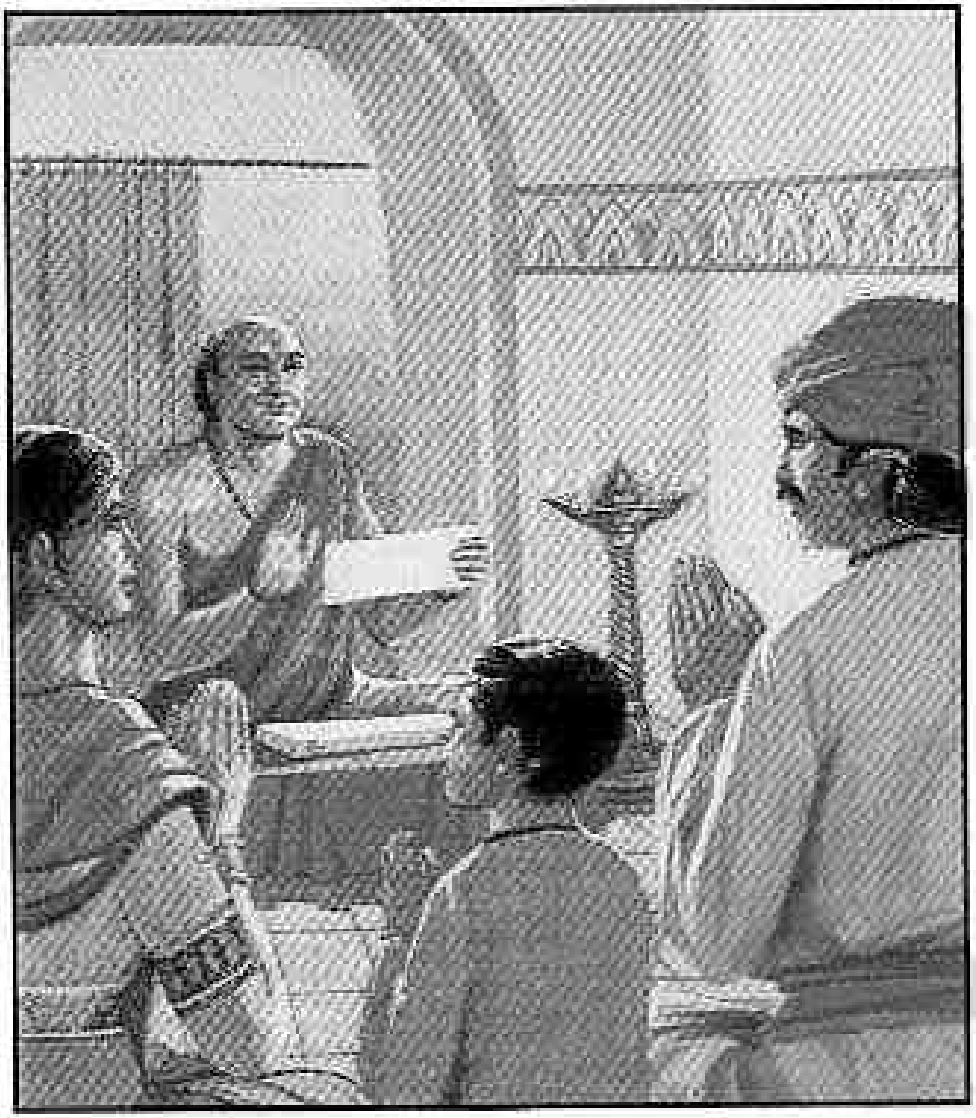

वह अपने घर पर ब्राह्मण को बुलाकर चालीसा का पाठ कराए और मन में किसी प्रकार का संदेह न रखे,

पाठ करावै दिन चालीसा।
ता पर कृपा करैं गौरीशा॥

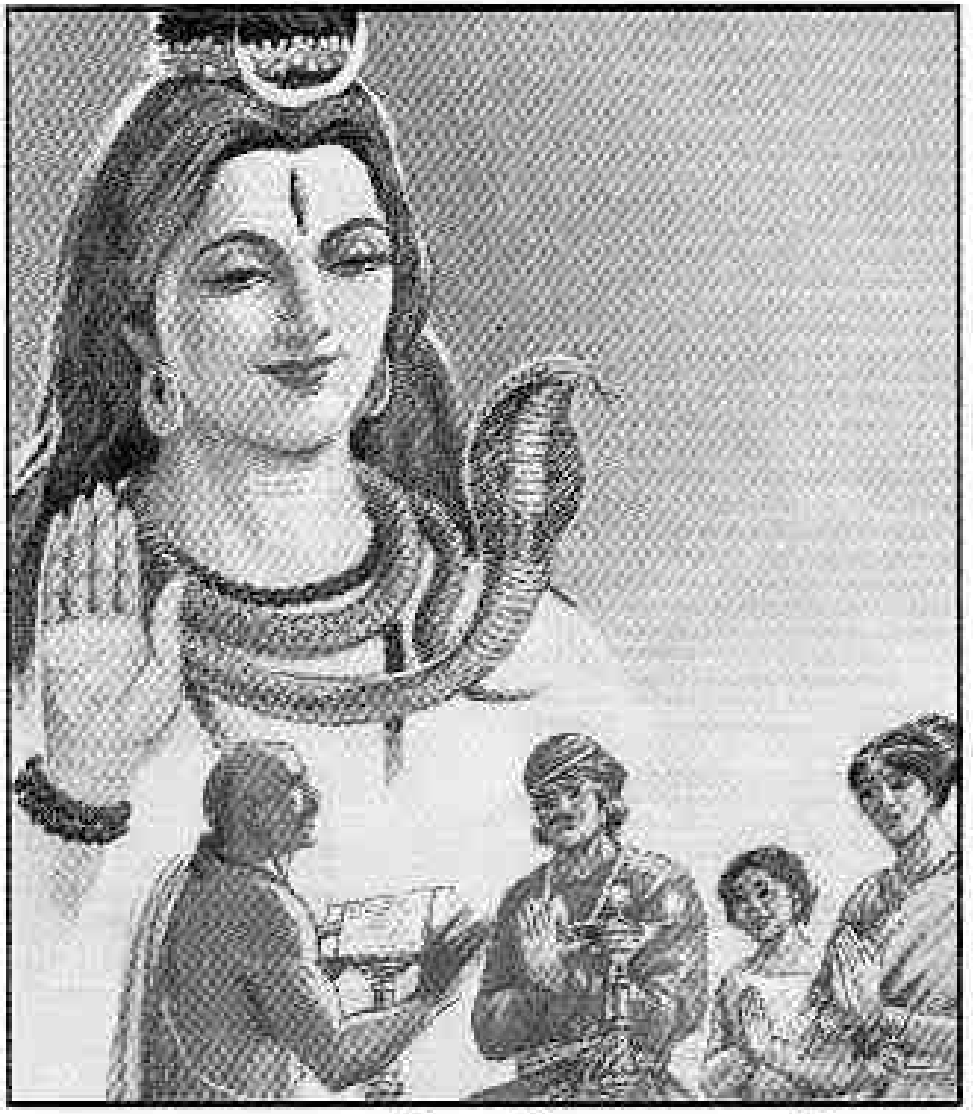

इस प्रकार चालीस दिन तक जो पाठ कराता है, उस पर भगवान शंकर की कृपा सहज ही होने लगती है।

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
कमी नहीं काहू की आवै॥

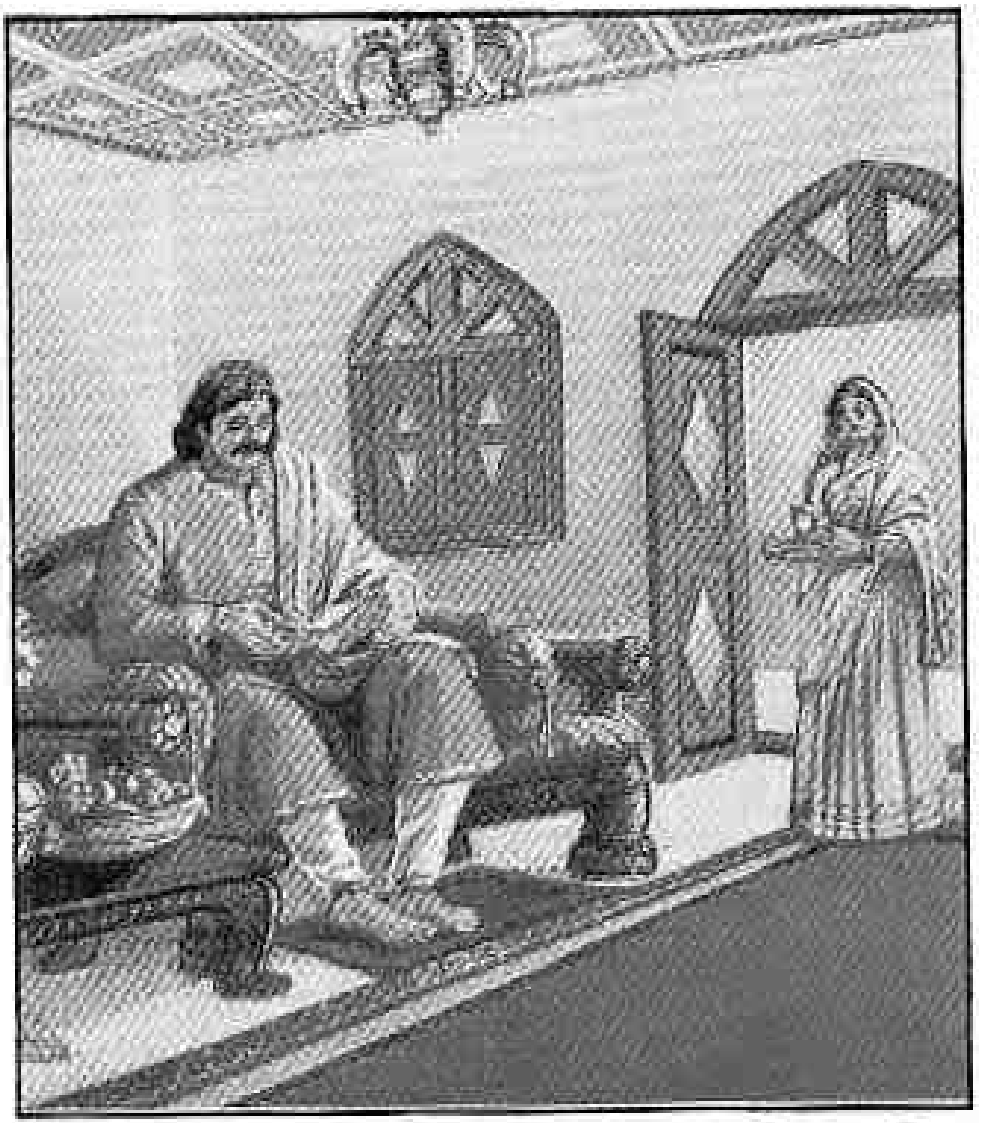

उसे अपार सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है और किसी भी वस्तु का अभाव नहीं रह जाता।

बारह मास करै जो पूजा।
तेहि सम धन्य और नहिं दूजा॥

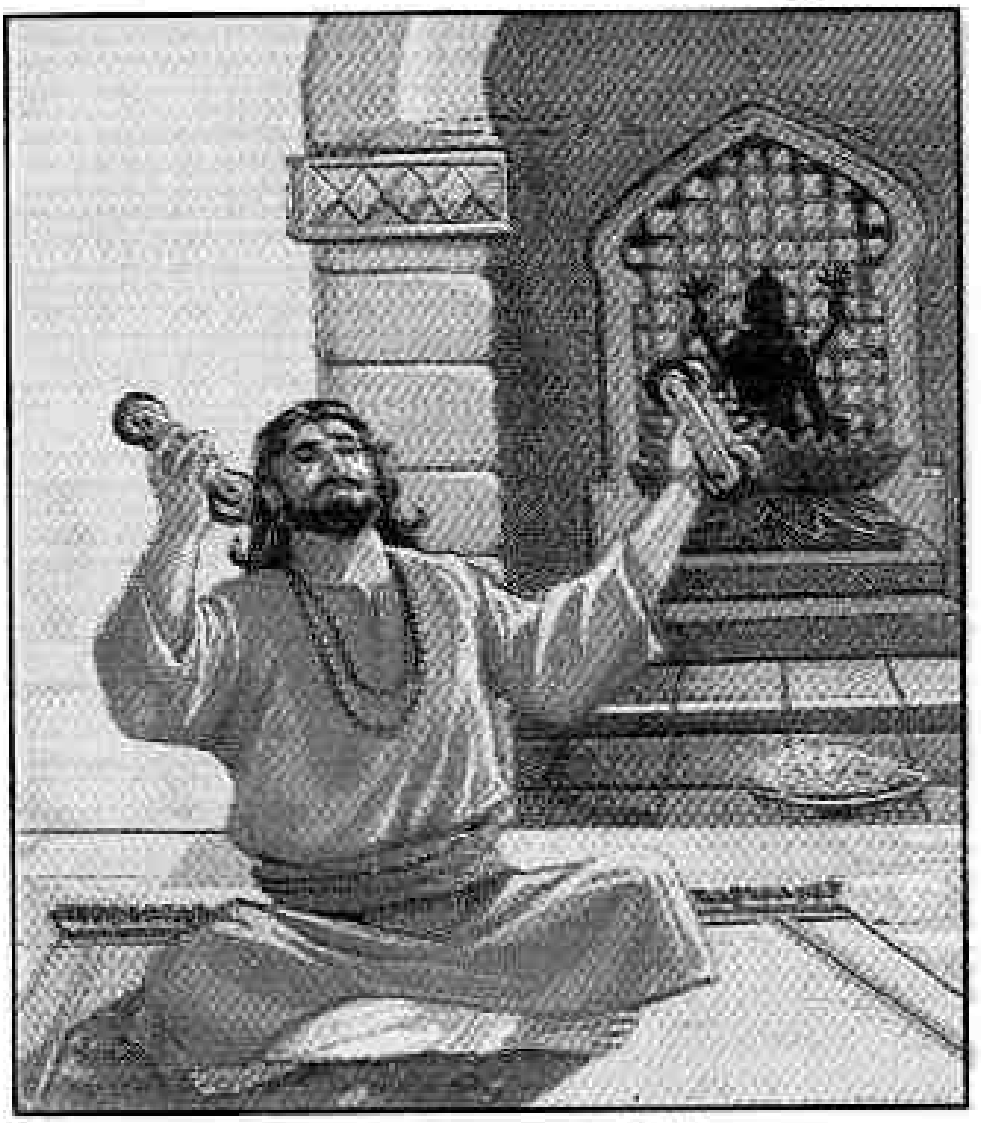

इस प्रकार, जो बारह महीने तक पूजा करता है, उसके समान अन्य कोई भी धन्य नहीं है।

प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं।
उन सम कोउ जग में कहुं नाहीं॥

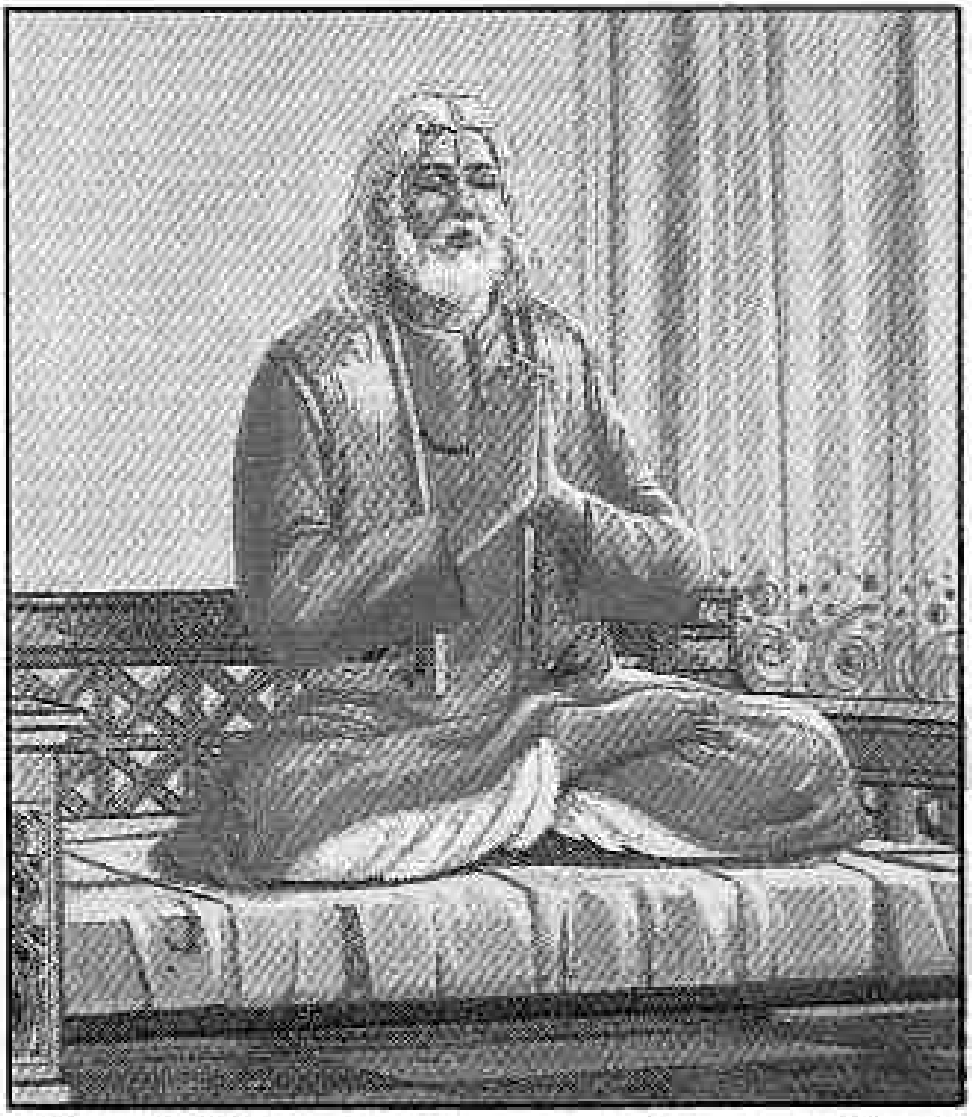

जो प्रतिदिन केवल अपने मन में ही इसका पाठ करता है, उसके समान संसार में और कोई नहीं है।

बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई॥

मैं अनेक प्रकार से इसकी महत्ता का वर्णन क्या करूं, केवल ध्यान लगाकर ही परीक्षा ले लो।

करि विश्वास करै व्रत नेमा।
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा॥

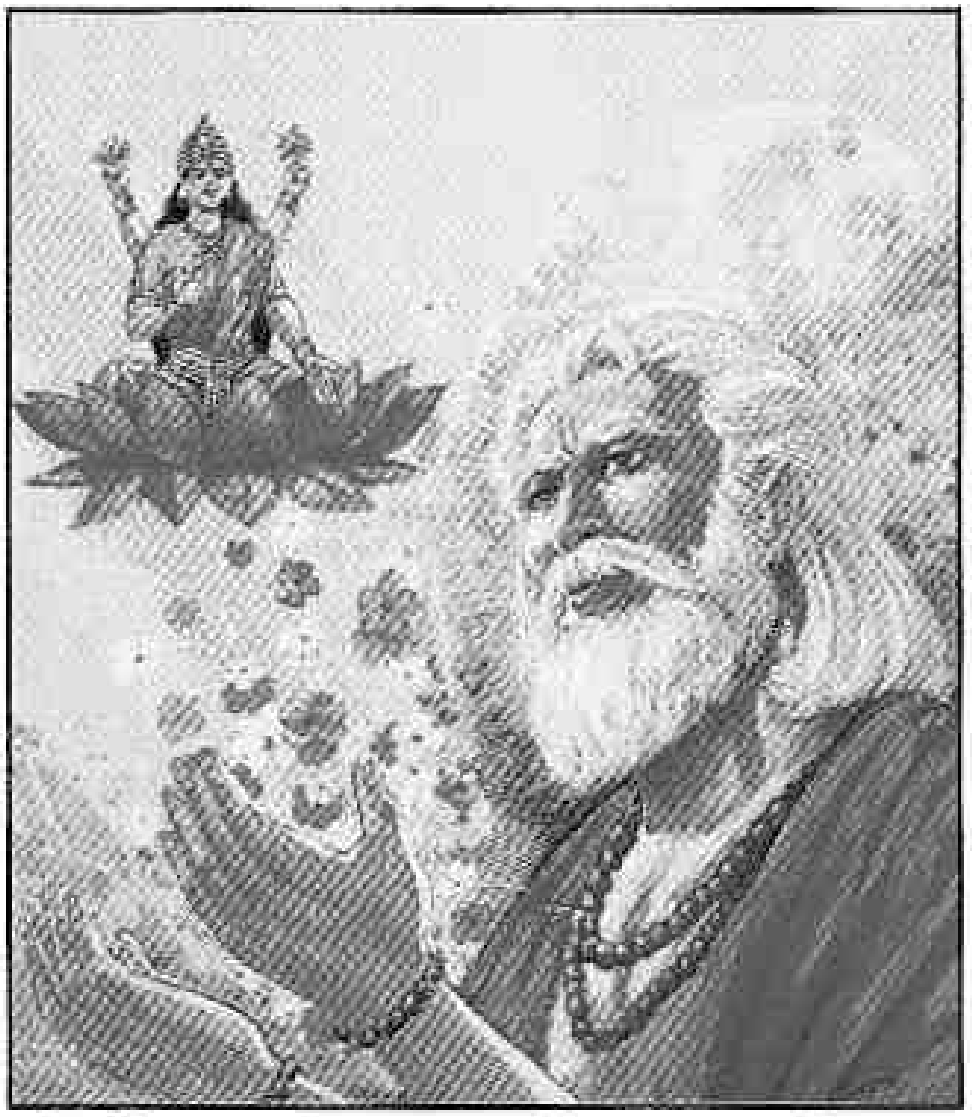

जो निष्ठापूर्वक व्रत-नियम आदि का पालन करता है, उसे सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं, मन में प्रेमभाव जागृत होता है।

जय जय जय लक्ष्मी भवानी।
सब में व्यापित हो गुण खानी॥

हे पार्वतीरूपा लक्ष्मी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो। हे गुणों की राशि! आप सभी में व्याप्त हो।

तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं।
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहीं॥

तुम्हारा प्रबल तेज विश्वविदित है। तुम्हारे समान दयालु कोई भी और कहीं भी नहीं है।

मोहिं अनाथ की सुधि अब लीजै।
संकट काटि भक्ति मोहिं दीजै॥

अब मुझ अनाथ की भी सुधि ले लीजिए। मेरे संकटों को दूर कर मुझे अपनी भक्ति प्रदान कीजिए।

भूल चूक करि क्षमा हमारी।
दर्शन दीजै दशा निहारी॥

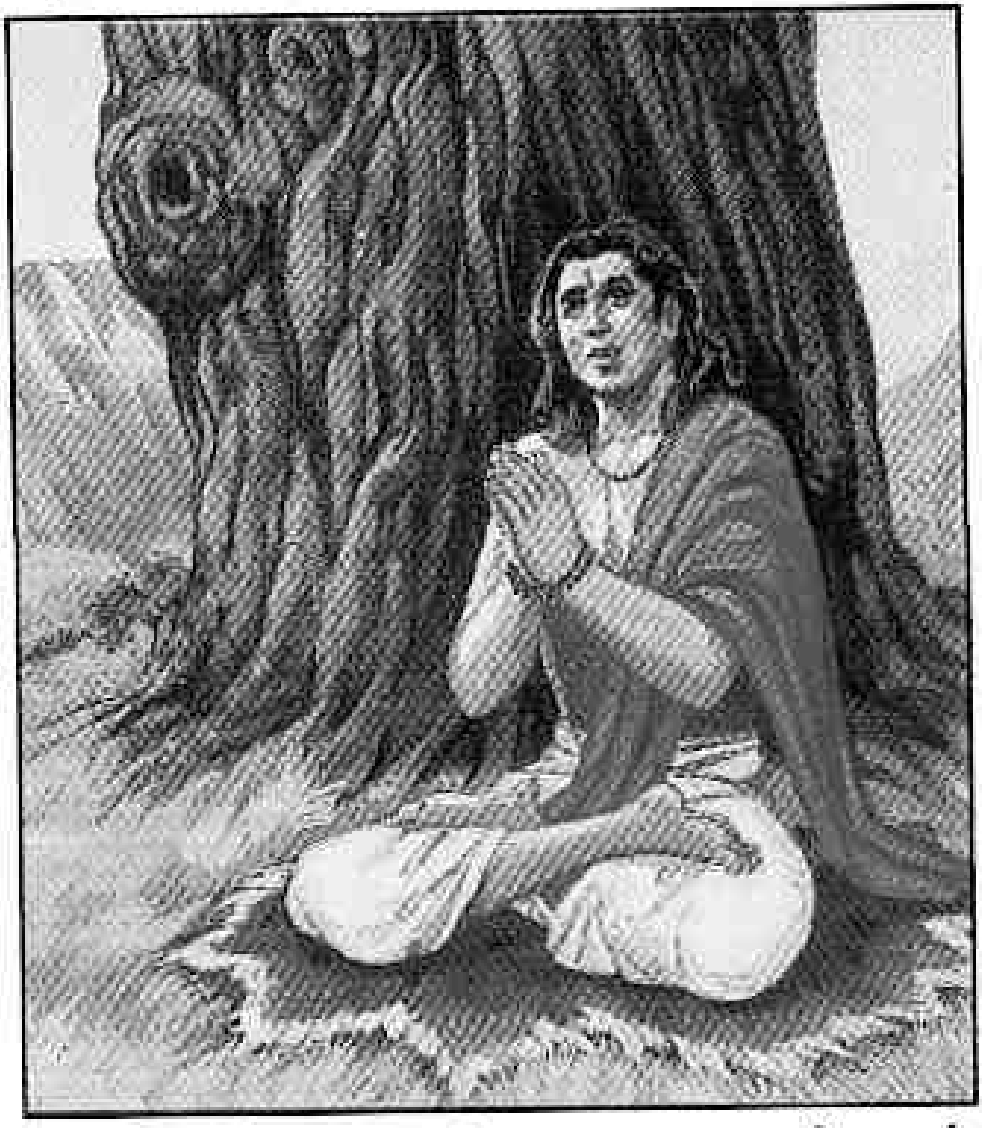

मुझसे जो कुछ भी भूल-चूक हो, उसे क्षमा कीजिए और मेरी (इस दीन) अवस्था को देखकर दर्शन दीजिए।

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी।
तुमहिं अक्षत दुःख सहते भारी॥

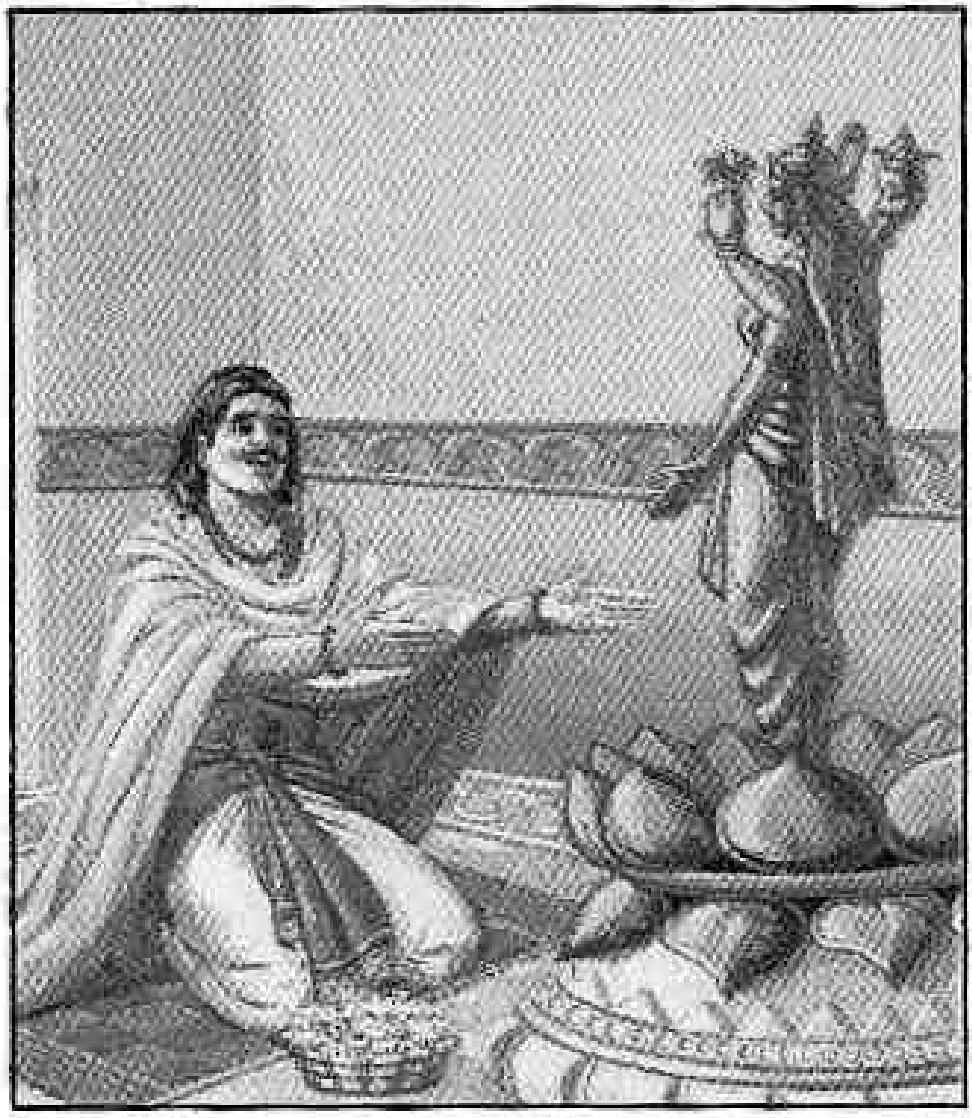

मुझे दर्शन का अधिकार है, परंतु दर्शन न पाकर मैं व्याकुल हो गया हूं। आपके रहते हुए मैं अपार कष्ट भोग रहा हूं।

नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में।
सब जानत हो अपने मन में॥

मेरे शरीर में न ज्ञान है, न बुद्धि है अर्थात् मैं निरा अज्ञानी हूं। इस बात को आप भली-भांति जानती हैं।

रूप चतुर्भुज करके धारण।
कष्ट मोर अब करहु निवारण॥

हे मां! चार भुजाओं वाला रूप धारण करके अब आप मेरे हर प्रकार के कष्टों को दूर कीजिए।

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई।
ज्ञान बुद्धि मोहिं नहिं अधिकाई॥

मेरे पास ज्ञान और बुद्धि की अधिकता नहीं है। इसलिए मैं किस प्रकार से आपकी महत्ता का गुणगान करूं?

॥ दोहा ॥

त्राहि-त्राहि दु:ख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयति-जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु का नाश॥

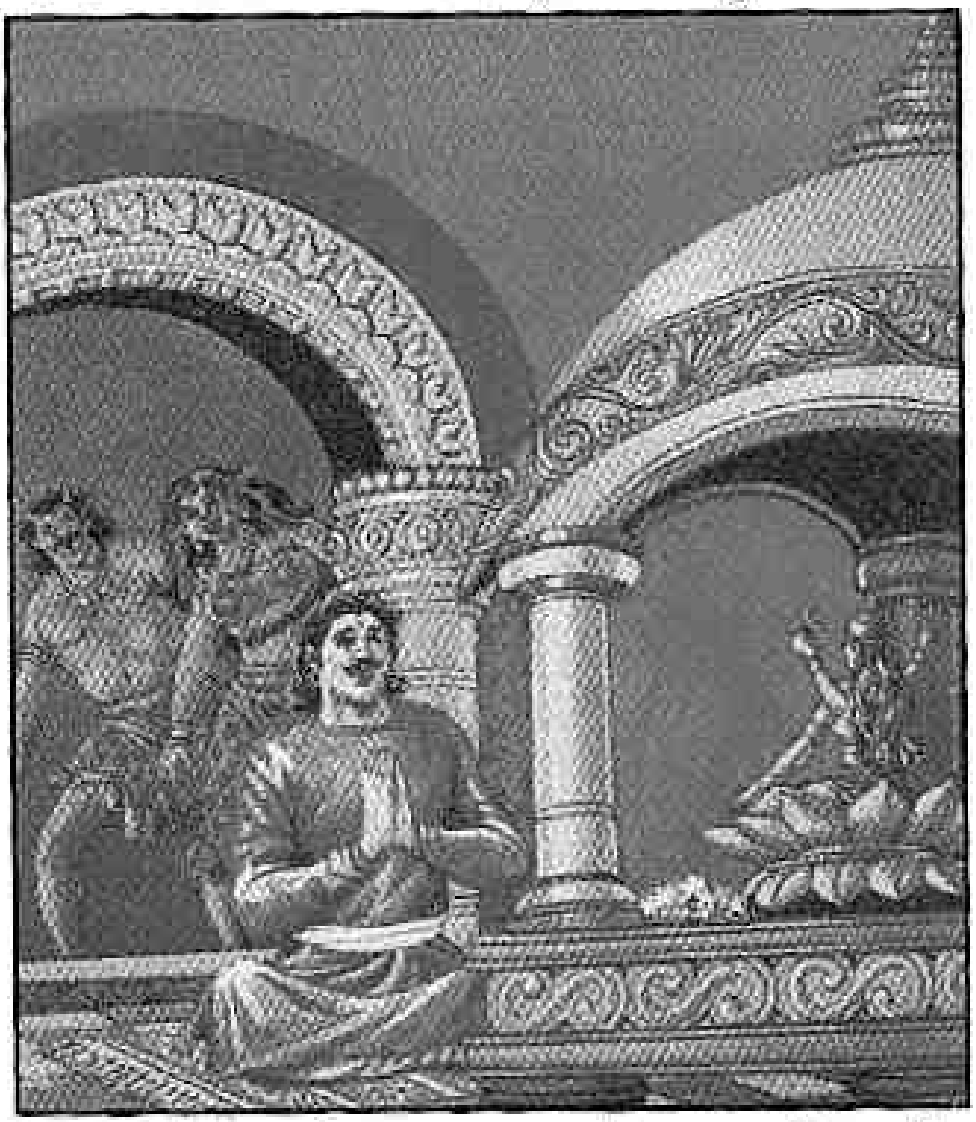

हे दुखों को दूर करने वाली! मेरे शत्रुओं का नाश और भय का हरण कीजिए। आपकी जय हो!

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर॥

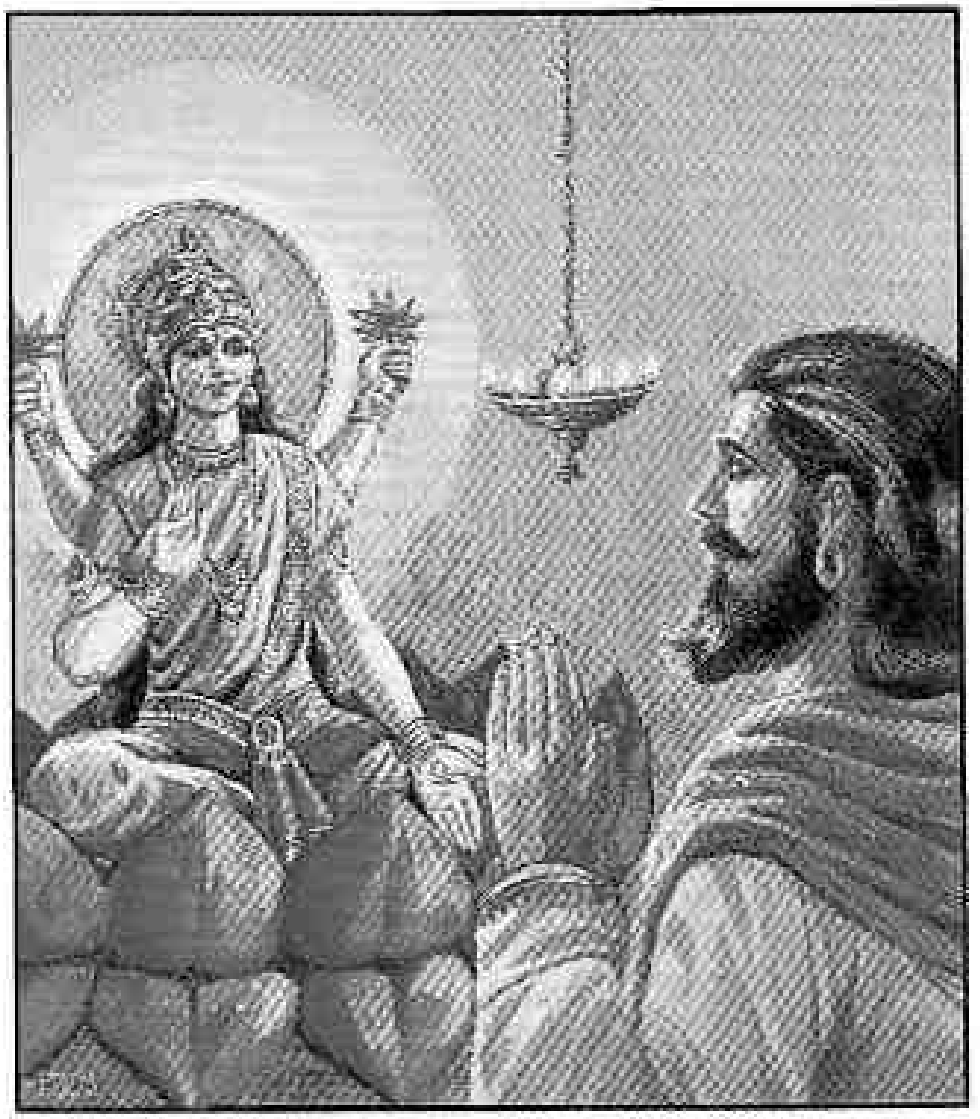

रामदास प्रतिदिन आपका ध्यान करता हुआ हाथ जोड़कर विनय करता है, अपने इस दास पर दया कीजिए।

श्रीलक्ष्मी सूक्त

लक्ष्मीजी के आराधकों के लिए अनिवार्य रूप से जपनीय है श्रीलक्ष्मीजी का यह विशिष्ट सूक्त। यह लक्ष्मी सूक्त स्वयं लक्ष्मीजी को संबोधित है।

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे
पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व॥

हे देवी! आप कमलमुखी, कमल पुष्प पर विराजमान, कमल पुष्पों को पसंद करने वाली, कमल-दल के समान नेत्रों वाली हैं। सृष्टि के सभी जीव आपकी कामना करते हैं। आप उन्हें मनोनुकूल फल देने वाली हैं। हे देवी! आपके चरण-कमल सदैव मेरे हृदय में स्थित हों।

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसंभवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥

हे मां! आपका मुखारविंद, उरु भाग, नेत्र

आदि कमल के समान हैं। आपकी उत्पत्ति कमल से ही हुई है। हे कमलनयनी! मैं आपका स्मरण करता हूं। आप मुझ पर कृपादृष्टि बनाए रखें।

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वान्कामांश्च देहि मे॥

अश्व, गौ, धन देने में समर्थ देवी आप मुझे धन प्रदान करें और मेरी सभी कामनाओं को पूर्ण करें।

पुत्र पौत्र धनं धान्य हस्त्यश्वादिगवेरथम्।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥

हे देवी! आप सृष्टि के सभी जीवों की मां हैं। हे माता! आप मुझे पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, हाथी-घोड़े, गौ, बैल, रथ आदि से युक्त कर दीर्घायु प्रदान करें।

धनमाग्नि धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसु।
धनमिंद्रो बृहस्पतिर्वरुणां धनमस्तु मे॥

हे लक्ष्मी! आप मुझे अग्नि, धन, वायु, सूर्य, जल, बृहस्पति, वरुण आदि के द्वारा धन की उपलब्धि कराएं।

वैनतेय सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥
वैनतेय पुत्र गरुड़जी तथा वृत्रासुर के वधकर्ता इन्द्र आदि अमृत पीने वाले सभी देवता मुझे अमृतयुक्त धन प्रदान करें।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां सूक्त जापिनाम्॥
इस सूक्त का पाठ करने वाले की क्रोध, मात्सर्य (ईर्ष्या), लोभ व अशुभ कर्मों में वृत्ति नहीं रहती, उसके सभी दुर्गुण स्वयं समाप्त हो जाते हैं।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुक गंधमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम्॥

हे कमलवासिनी! आप हाथ में कमल धारण किए रहती हैं। श्वेत व स्वच्छ वस्त्र, चंदन व माला से युक्त हे विष्णुप्रिया देवी! आप सबके मन की जानने वाली हैं। हे त्रिभुवनेश्वरी! मुझ दीन पर कृपा करें।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥
भगवान विष्णु की हृदयेश्वरी, क्षमा की मूर्ति, माधवप्रिया, भगवान अच्युत की प्रेयसी लक्ष्मी देवी मैं आपको बार-बार नमन करता हूं।
महोदेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥
विष्णुपत्नी महादेवी का मैं स्मरण करता हूं। मुझ पर कृपा करें और सद्कार्यों में प्रेरित करें।
चंद्रप्रभां लक्ष्मीमेशानीं सूर्याभां लक्ष्मीमेश्वरीम्।
चंद्र सूर्याग्निसंकाशां श्रिय देवीमुपास्महे॥
जो चंद्रमा की आभा के समान और सूर्य-प्रकाश के समान प्रकाश वाली हैं, उन लक्ष्मीजी की मैं आराधना करता हूं।
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाभिधाच्छ्रोभमानं महीयते।
धान्यं धनं पशु बहु पुत्रलाभम् सत्संवत्सरं दीर्घमायुः॥
लक्ष्मी सूक्त का पाठ करने वाला श्री, तेज, आयु, स्वास्थ्य, धन-धान्य व पशुधन सम्पन्न, पुत्रवान होकर दीर्घायु प्राप्त करता है।

महालक्ष्म्यष्टकम्

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

इन्द्र बोले—श्रीपीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित हे महामाये! तुम्हें नमस्कार है। हाथ में शंख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मी! तुम्हें प्रणाम है।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

गरुड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवती महालक्ष्मी! तुम्हें प्रणाम है।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्ते ते॥

सर्वज्ञा, सबको वर देने वाली, दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुखों को दूर करने वाली, हे देवी महालक्ष्मी! तुम्हें नमस्कार है।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मंत्रपूत भगवती लक्ष्मी! तुम्हें सदा प्रणाम है।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
हे आदि-अंत-रहित महेश्वरी! हे योग से प्रकट हुई महालक्ष्मी! तुम्हें नमस्कार है।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
हे देवी! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति, महोदरा और बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवी महालक्ष्मी! तुम्हें नमस्कार है।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्म स्वरूपिणी देवी! हे परमेश्वरी! हे जगदम्बे! हे महालक्ष्मी! तुम्हें मेरा प्रणाम है।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

हे देवी! तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो। सम्पूर्ण जगत में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली अर्थात् जगत की अभिन्न निमित्त-उपादान कारणरूपा हो। हे महा-लक्ष्मी! तुम्हें मेरा प्रणाम है।

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥

जो मनुष्य भक्ति युक्त होकर इस महा-लक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता है, वह सारी सिद्धियों और राज्य वैभव को प्राप्त कर सकता है।

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥

जो प्रतिदिन एक समय पाठ करता है, उसके बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। जो दो समय पाठ करता है, वह धन-धान्य से सम्पन्न होता है।

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।

जो प्रतिदिन तीन काल इस अष्टक का पाठ करता है, उसके शत्रुओं का नाश हो जाता है और उसके ऊपर कल्याणकारिणी वरदायिनी महालक्ष्मी सदा ही प्रसन्न होती हैं।

श्रीकमलापत्यष्टकम्

भुजगतल्पगतं घनसुन्दरं
गरुडवाहनमम्बुजलोचनम् ।
नलिन-चक्र-गदाकरमव्ययं
भजत रे मनुजाः कमलापतिम् ॥

रे मनुष्यो ! जो शेषशय्या पर पौढ़े हुए हैं, नील मेघ-सदृश श्याम-सुन्दर हैं, गरुड़ जिनका वाहन है और जिनके कमल जैसे नेत्र हैं, उन शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी अव्यय श्रीकमलापति को भजो।

अलिकुलासितकोमलकुन्तलं
विमलपीतदुकूलमनोहरम् ।
जलधिजाङ्कितवामकलेवरं
भजत रे मनुजाः कमलापतिम् ॥

भौंरों के समान जिनकी काली-काली कोमल अलकें हैं, अति निर्मल सुन्दर पीताम्बर है और जिनके वामांक में श्रीलक्ष्मी जी सुशोभित हैं, रे मनुष्यो ! उन श्रीकमलापति को भजो।

किमु जपैश्च तपोभिरुताध्वरै-
रपि किमुत्तमतीर्थनिषेवणैः।
किमुत शास्त्रकदम्बविलोकनै-
र्भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥

जप, तप, यज्ञ अथवा उत्तम-उत्तम तीर्थों के सेवन में क्या रखा है ? अथवा अधिक शास्त्रावलोकन के पचड़े में पड़ने से ही क्या होना है ? रे मनुष्यो ! बस श्रीकमलापति को ही भजो।

मनुजदेहमिमं भुवि दुर्लभं
समधिगम्य सुरैरपि वाञ्छितम्।
विषयलम्पटतामपहाय वै
भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥

इस संसार में यह मनुष्य शरीर अति दुर्लभ और देवगणों से भी वांछित है, ऐसा जानकर विषय-लम्पटता को त्याग कर रे मनुष्यो ! श्रीकमलापति को भजो।

न वनिता न सुतो न सहोदरो
न हि पिता जननी न च बान्धवः।

व्रजति साकमनेन जनेन वै
भजत रे मनुजाः कमलापतिम् ॥

इस जीव के साथ स्त्री, पुत्र, भाई, पिता, माता और बंधुजन कोई भी नहीं जाता, अतः रे मनुष्यो! श्रीकमलापति को भजो।

सकलमेव चलं सचराचरं
जगदिदं सुतरां धनयौवनम्।
समवलोक्य विवेकदृशा द्रुतं
भजत रे मनुजाः कमलापतिम् ॥

यह सचराचर जगत, धन और यौवन सभी अस्थिर हैं, ऐसा विवेकदृष्टि से देखकर रे मनुष्यो! शीघ्र ही श्रीकमलापति को भजो।

विविधरोगयुतं क्षणभङ्गुरं
परवशं नवमार्गमलाकुलम्।
परिनिरीक्ष्य शरीरमिदं स्वकं
भजत रे मनुजाः कमलापतिम् ॥

यह शरीर विभिन्न रोगों का आश्रय, क्षणिक, परवश तथा मल से भरे नौ मार्गों वाला है, रे मनुष्यो! श्रीकमलापति को भजो।

मुनिवरैरनिशं हृदि भावितं
शिवविरिञ्चिमहेन्द्रनुतं सदा।
मरण-जन्म-जरा-भयमोचनं
भजत रे मनुजाः कमलापतिम्॥

मुनिजन जिनका अहर्निश हृदय में ध्यान करते हैं, शिव, ब्रह्मा तथा इन्द्रादि समस्त देवगण जिनकी सर्वदा वन्दना करते हैं तथा जो जरा, जन्म और मरणादि के भय को दूर करने वाले तथा जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करने वाले हैं, रे मनुष्यो! उन श्रीकमलापति को भजो।

हरि-पदाष्टकम्-एतदनुत्तमं
परमहंसजनेन समीरितम्।
पठति यस्तु समाहितचेतसा
व्रजति विष्णुपदं स नरो ध्रुवम्॥

दास परमहंस द्वारा कहे गए इस अत्युत्तम भगवान हरि के अष्टक को जो मनुष्य समाहितचित्त से पढ़ता है, वह इह लोक में सुख-वैभव को प्राप्त कर मृत्यु के बाद भगवान विष्णु के परमधाम को प्राप्त होता है।

श्री लक्ष्मीजी की आरती

जय लक्ष्मी माता, जय जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत हर विष्णु विधाता॥

ब्रह्माणी रुद्राणी तू ही जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥

दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्याता ऋद्धि सिद्धि पाता॥

तू पाताल बसंती, तू ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशक जगनिधि की त्राता॥

जिस घर थारो वासा ताहि में गुण आता।
कर न सके सोइ कर ले मन नहिं धड़काता॥

तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव तुम बिन नहिं आता॥

शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दिश ताको कोई नहीं पाता॥

श्री लक्ष्मीजी की आरति जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता॥

स्थिर चर जगत रचाये शुभ कर्मन लाता।
तेरा भक्त मैयाजी शुभ दृष्टी पाता॥

लक्ष्मीनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मी विष्णो, ॐ जय लक्ष्मी विष्णो।
जय लक्ष्मीनारायण, जय लक्ष्मी विष्णो।
जय माधव, जय श्रीपति, जै जै जै विष्णो॥
जय चम्पा सम वर्णे, जय नीरद कान्ते।
जय मंदस्मित शोभे, जय अद्भुत शांते॥
कमल वराभय हस्ते शंखादिकधारिन।
जय कमलालयवासिनि गरुड़ासनचारिन॥
सच्चिन्मयकरचरणे सच्चिन्मयमूर्ते।
दिव्यानन्द विलासिनि जय सुखमयमूर्ते॥
तुम त्रिभुवन पति विष्णो, तुम सबकी त्राता।
तुम लोक त्रय जननी, तुम सबकी दाता॥
तुम धन जन सुख संतति जप देने वाली।
परमानन्द विधाता तुम हो वनमाली॥
तुम हो सुमति घरों में, तुम सबके स्वामी।
चेतन और अचेतन के अंतर्यामी॥
शरणागत हूं, मुझ पर कृपा करो दाता।
जय लक्ष्मी नारायण, नव मंगल दाता॥